IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुकूली शिक्षा तकनीक और व्यक्तिगत निर्देश

शोधार्थिनी

शशि प्रभा

शिक्षा विभाग

साई नाथ विश्वविद्यालय राँचीए झारखण्ड

शोध सार

शिक्षा मानवजीवन का एक आवश्यक अंग हैं। इसलिए अनुकूली शिक्षा तकनीक और व्यक्तिगत निर्देश आधुनिक शिक्षा प्रणाली में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन तकनीकों का उद्देश्य छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओंए क्षमताओं और सीखने की गति के आधार पर शिक्षा प्रदान करना है। यह अध्ययन अनुकूली शिक्षा तकनीकों और व्यक्तिगत निर्देश के महत्वए उपयोग और प्रभावों का विश्लेषण करता है।

शिक्षा शिक्षा जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो ज्ञानए कौशल और समझ प्रदान करती है। यह व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाती है और समाज में बेहतर योगदान करने में मदद करती है। शिक्षा के माध्यम सेए लोग अपने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार कर सकते हैं और एक सफल जीवन जी सकते हैं। शिक्षा न केवल नौकरी के लिए बल्कि जीवन के हर पहलू के लिए महत्वपूर्ण है।

शिक्षा का महत्व

प्रस्तावना आज के आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा काफी अहम है। आजकल के समय में शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत सारे तरीके अपनाये जाते हैं। वर्तमान समय में शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल चुका है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद डिस्टेंस एजूकेशन के माध्यम से भी नौकरी के साथ ही पढ़ाई भी कर सकते हैं। शिक्षा बहुत महंगी नहीं हैए कोई भी कम धन होने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हम आसानी से किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में बहुत कम शुल्क में प्रवेश ले सकते हैं। अन्य छोटे संस्थान भी किसी विशेष क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। शिक्षा के महत्व को सरकार भी अब समझ रही है और सभी नागरिकों की शिक्षा के लिए निरंतर प्रयास कर रही है।

शिक्षा क्या हैः यह लोगों की सोच को सकारात्मक विचार लाकर बदलती है और नकारात्मक विचारों को हटाती है। बचपन में ही हमारे माता-पिता हमारे मस्तिष्क को शिक्षा की ओर ले जाने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे प्रसिद्ध शैक्षणिक संस्था में हमारा दाखिला कराकर हमें अच्छी शिक्षा प्रदान करने का हरसंभव प्रयास करते हैं। यह हमें तकनीकी और उच्च कौशल वाले ज्ञान के साथ ही पूरे संसार में हमारे विचारों को विकसित करने की क्षमता प्रदान करती है। अपने कौशल और ज्ञान को बढ़ाने का सबसे अच्छे तरीके अखबारों को पढ़नाए टीवी पर ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों को देखनाए अच्छे लेखकों की किताबें पढ़ना आदि हैं। शिक्षा हमें अधिक सभ्य और बेहतर शिक्षित बनाती है। यह समाज में बेहतर पद और नौकरी में कल्पना की गए पद को प्राप्त करने में हमारी मदद करती है।

शिक्षा की मुख्य भूमिका आधुनिक तकनीकी संसार में शिक्षा मुख्य भूमिका को निभाती है। आजकलए शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के लिए बहुत तरीके हैं। शिक्षा का पूरा तंत्र अब बदल दिया गया है। हम अब 12वीं कक्षा के बाद दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (डिस्टेंस एजूकेशन) के माध्यम से भी नौकरी के साथ ही पढ़ाई भी कर सकते हैं। शिक्षा बहुत महंगी नहीं हैए कोई भी कम धन होने के बाद भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता है। दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से हम आसानी से किसी भी बड़े और प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में बहुत कम शुल्क पर प्रवेश ले सकते हैं। अन्य छोटे संस्थान भी किसी विशेष क्षेत्र में कौशल को बढ़ावा देने के लिए शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

विकास का एक मूल मंत्र: शिक्षा शिक्षा लोगों के मस्तिष्क को उच्च स्तर पर विकसित करने का कार्य करती है और समाज में लोगों के बीच सभी भेदभावों को हटाने में मदद करती है। यह हमारी अच्छा अध्ययन कर्ता बनने में मदद करती है और जीवन के हर पहलू को समझने के लिए सूझ-बूझ को विकसित करती है। यह सभी मानव अधिकारोंए सामाजिक अधिकारोंए देश के प्रति कर्तव्यों और दायित्वों को समझने में भी हमारी सहायता करता है।

शिक्षा हम सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए आवश्यक उपकरण है। हम जीवन में शिक्षा के इस उपकरण का प्रयोग करके कुछ भी अच्छा प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा का उच्च स्तर लोगों को सामाजिक और पारिवारिक आदर और एक अलग पहचान बनाने में मदद करता है। शिक्षा का समय सभी के लिए सामाजिक और व्यक्तिगत रुप से बहुत महत्वपूर्ण समय होता है। यह एक व्यक्ति को जीवन में एक अलग स्तर और अच्छाई की भावना को विकसित करती है।

उपसंहार किसी भी बड़ी पारिवारिकए सामाजिक और यहां तक कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को भी हर करने की क्षमता प्रदान करती है। हम से कोई भी जीवन के हरेक पहलू में शिक्षा के महत्व को अनदेखा नहीं कर सकता। यह मस्तिष्क को सकारात्मक ओर मोड़ती है और सभी मानसिक और नकारात्मक विचारधाराओं को हटाती है। सबसे पहले शिक्षा समाज में ज्ञान के प्रसार में मदद करती है। यह शायद शिक्षा का सबसे उल्लेखनीय पहलू है। शिक्षित समाज में ज्ञान का तेजी से प्रसार होता है। इसके अलावाए शिक्षा द्वारा ज्ञान का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरण होता है।

शिक्षा का उद्देश्य

शिक्षा मनुष्य के भीतर अच्छे विचारों का निर्माण करती हैए मनुष्य के जीवन का मार्ग प्रशस्त करती है। बेहतर समाज के निर्माण में सुशिक्षित नागरिक की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इंसानों में सोचने की शक्ति होती है इसलिए वो सभी प्राणियों में श्रेष्ठ है लेकिन अशिक्षित मनुष्य की सोच पशु के समान होती है। वो सही गलत का फैसला नहीं कर पाता। इसलिए शिक्षा मानव जीवन के लिए ज़रूरी हैए जो उसे ज्ञानी बनाती है।

भारतीय संस्कृति में प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में चार लक्ष्य माने गए हैं जिन्हें पुरुषार्थ की संज्ञा दी जाती है ृ धर्म ए अर्थ ए काम ए मोक्ष। इन चारों में से मोक्ष सबसे अधिक पवित्र एवं महत्वपूर्ण माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का चरम उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति होती है। अतः शिक्षा ही मोक्ष की प्राप्ति का एकमात्र साधन माना गया है।

लेकिन शिक्षा का उद्देश्य मात्र शिक्षित होना नहीं होताए बल्कि शिक्षा के कई अन्य मकसद होते हैंए जिसे कई शिक्षाके विद्वानों ने अलग-अलग तरीके से परिभाषित किया है।

चलिए आपको बताते हैं उनकी नज़र में शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में:

महात्मा गांधी ृ श्शिक्षा से मेरा का तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीरए मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।"

स्वामी विवेकानंद ृ श्मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति ही शिक्षा है।"

राधा मुकुन्द मुखर्जी ृ श्प्राचीन काल में शिक्षा मोक्ष के लिए आत्म ज्ञान का साधन थीए इस प्रकार शिक्षा जीवन के अंतिम उद्देश्य यानि मोक्ष प्राप्ति का साधन मानी जाती थी।"

जॉन डुई ृ श्शिक्षा व्यक्ति के उन सभी भीतरी शक्तियों का विकास है जिससे वह अपने वातावरण पर नियंत्रण रख कर अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सकें।"

पेस्टालॉजी ृ श्शिक्षा मानव की संपूर्ण शक्तियों का प्राकृतिक प्रगतिशील और सामंजस्यपूर्ण विकास है।"

राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964.66 ृ श्शिक्षा राष्ट्र के आर्थिकए सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है। शिक्षा राष्ट्रीय संपन्नता एवं राष्ट्र कल्याण की कुंजी है।"

दुनिया की प्रगतिवादी विचारों ने बच्चों के अधिकारों के दृष्टिकोण से स्कूली शिक्षा को अनिवार्य बना दिया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 के मुताबिकए शिक्षा के व्यापक लक्ष्य हैं जैसे- बच्चों के भीतर विचार और कर्म की स्वतंत्रता विकसित करनाए दूसरों के कल्याण और उनकी भावनाओं के प्रति संवेदनशीलता पैदा करनाए और बच्चों को नई परिस्थितियों के प्रति लचीले और मौलिक ढंग से पेश आने में मदद करना। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे उनके भीतर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में भाग लेने कीए और मौलिक अभिव्यक्ति की प्रवृत्तिए तथा

सौन्दर्यबोध की समझ विकसित हो और साथ ही आर्थिक प्रक्रियाओं व सामाजिक बदलाव की ओर कार्य करने व उसमें योगदान देने की क्षमता भी विकसित हो सके।

वैदिक काल में शिक्षा का उद्देश्य आदर्श और महान था। लेकिन समय के साथ-साथ शिक्षा के उद्देश्यों में भी परिवर्तन होता रहा वैदिक काल में जहां शिक्षा अध्यात्म ए संगीतए वेद उपनिषदए राजनीतिए रणकौशलए आदि पर आधारित हुआ करती थी। मध्यकाल में शिक्षा का उद्देश्य धर्म के प्रचार ृ प्रसार के लिए हो गया। वहीं आधुनिक काल में शिक्षा का उद्देश्य पुनः बालक के सर्वांगीण विकास पर आधारित हो गया।

इस शिक्षा में बालक के मस्तिष्क के विकास की ही नहीं बल्कि उसके शारीरिक विकास पर भी ध्यान दिया जाता है। आधुनिक पाठ्यक्रम में बालक के हर एक रूचि को ध्यान में रखा जाता है अथवा उसके सर्वांगीण विकास पर विशेष बल दिया जाता है। जिसमें चरित्र निर्माणए व्यक्तित्व का विकासए नागरिक और सामाजिक कर्तव्यों का पालनए सामाजिक सुख और कौशल की उन्नतिए राष्ट्रीय संस्कृति का संरक्षण और प्रसार शामिल है।

अलग-अलग काल में व्यक्तियों ने अलग-अलग तरीके से जीवन में शिक्षा के उद्देश्य को समझाने का प्रयास किया है। शिक्षा के कई अन्य सार्थक उद्देश्य भी हो सकते हैं। शिक्षा भी मनुष्यों को दो अलग प्रजातियों में बांटती हैए शिक्षित व अशिक्षित व्यक्ति में। मनुष्य का व्यक्तित्व बताता है कि वह किस तरह से शिक्षित हुआ है। शिक्षा लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक उत्तम साधन है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शिक्षित होने की बात करें तो यह भी उसी दिशा में जाती है जैसा की शिक्षाविदों ने बताया है। विज्ञान भी जीवन की उत्पत्ति एवं सुखद अंत या फिर जीवन एवं मृत्यु से जुड़े सबसे जटिल सवालों के जवाब खोजने में लगा है।

आज शिक्षा का बाजारीकरण होने के कारण सभी वर्ग के बच्चों के लिए शिक्षा प्राप्त करना कठिन हो गया हैए आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के बच्चे करियर बनाने के लिए जिस क्षेत्र में जाना चाहते हैं वो वहां तक नहीं पहुंच पा रहे हैं।

वैसे तो शिक्षा पर सबका समान अधिकार माना जाता है लेकिन हकिक़त इसके विपरीत है। ऐसे में इस मुद्दें पर हर संभव प्रयास करने की ज़रूरत है जिससे हर जाति और वर्ग में शिक्षा का समान वितरण संभव हो सके।

शिक्षा का व्यक्तिगत उद्देश्य भी हो सकता है यदि मानव व्याक्तिगत रूप से स्वयं में आत्मशांति के लक्ष्य को पूर्ण कर लेता है तो यहए शिक्षा का एक उचित पड़ाव होगा।

वहीं शिक्षा का सामाजिक उद्देश्य कहता है कि समाज प्रत्येक मनुष्य का है। समाज में रहकर वह अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सकता है एवं अच्छी तरह से अपने समाज को शिक्षित कर सकता है।

शिक्षा के आम उद्देश्यों में चरित्र निर्माण भी अहम भूमिका निभाता है। अच्छी शिक्षा ग्रहण कर हम एक अच्छे चरित्र का निर्माण कर सकते हैंए यदि मनुष्य का चरित्र अच्छा होगा तो स्वभाव भी अपने आप निर्मल हो जाता हैए और यह मदद करता है उज्ज्वल भविष्य व अच्छा समाज बनाने में।

शिक्षा से कौशल और हुनर से सुख समृद्धि प्राप्त होती है यदि सुखी जीवन व्यतीत करना है तो हमारे अंदर कौशल की आवश्यकता हैए जिसे शिक्षा के बिना हासिल करना संभव नहीं है। आज कौशल प्राप्त करने के लिए अनेक साधन हैं किन्तु पहले यह वंशानुगत हुआ करता था। शिक्षा का वंशानुगत प्रसार ही आज जाति भेदए बड़ा-छोटाए ऊंच-नीच जैसी अनेक भिन्नता निर्माण कर चुका है।

ऐसे में शिक्षा के महत्त्व को देखते हुए इसे और अधिक व्यापक बनाने की आवश्यकता है। शिक्षा को जन-जन तक फैलाने के लिए तीव्र प्रयासों की आवश्यकता है। इक्कीसवीं सदी में भारत का हर नागरिक शिक्षित होए इसके लिए सभी ज़रूरी कदम उठाने होंगे। सर्वशिक्षा अभियान को प्रभावी तरीके से लागू करने की आवश्यकता है। तभी हमारा देश पूर्ण रूप से सुशिक्षित राष्ट्र कहलाएगा।

औपचारिक शिक्षा औपचारिक शिक्षा वह है जिसे सचेतन प्रयासों से प्रदान तथा प्राप्त किया जाता है। यहाँ शिक्षा प्रदान करने वाला भली प्रकार से जानता है कि उसे शिक्षा प्रदान करनी है। यहाँ शिक्षक एवं बालक दोनों को ही शिक्षा के उद्देश्य ज्ञात रहते हैं तथा जिसको बालक किसी कार्यक्रम के अनुसार नियन्त्रित वातावरण में रहते हुए किसी पूर्व निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए निश्चित पाठ्यक्रम (ज्ञान) को निश्चित शिक्षण-पद्धति के द्वाराए निश्चित स्थान परए निश्चित समय में समाप्त करकेए परीक्षा देकरए उपाधि ग्रहण कर लेता है। ऐसी शिक्षा को प्रदान करने के साधन विद्यालयए पुस्तकालयए अजायबघर चित्र ृ भवन तथा पुस्तकें आदि हैं।

अनौपचारिक शिक्षा अनियमित शिक्षा को अनौपचारिक शिक्षा कहा जाता है। इस तरह की शिक्षा में किसी चीज की निश्चितता नहीं होती है। इसलिए इसे आकस्मिक और अनियोजित शिक्षा भी कहा जाता है। यह स्वभाविक या प्राकृतिक रूप से होती है। यह शिक्षा पूर्वविचारित नहीं होती है। बालक इसे अपने परिवार के अन्दर और आस-पड़ोसए खेल के मैदानए पार्क आदि जैसे खुले वातावरण में सार्वजनिक जगहों परए उठते-बैठतेए खेलते-कूदलेए बात-चीत करके स्वाभाविक रूप से स्वतंत्रतापूर्वक ग्रहण करता है। यह पत्राचारए सम्पर्क कार्यक्रमोंए जन संचार के साधनों द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती हैं। इसके लक्ष्य और उद्देश्य निश्चित नहीं होते हैं और न ही कोई निश्चित पाठ्यक्रमए पाठ्यपुस्तकए शिक्षण विधि या समय-सारणी होती है। यह शिक्षा जन्म से लेकर मृत्यु तक निर्बाध रूप से लगातार चलती रहती है। यह शिक्षा जीवन के प्रत्येक अनुभव से प्राप्त की जाती है। अनौपचारिक शिक्षा के प्रमुख साधन-परिवारए समुदायए मित्र-मंडलीए धर्मए समाजए खेल का मैदानए प्रकृति इत्यादि। श्री सौरभ खरे के अनुसार अनौपचारिक शिक्षा में कोई भी निर्धारित नियमानुसार पद्धति आदि नहीं होती बल्कि सीखने वाला ज्यादा महत्त्वपूर्ण होता है तथा वह अपने विवेक से सीखता है जैसे प्राचीनकाल में गुरु दत्तात्रेय जी के द्वारा 24 गुरुओं से ज्ञान प्राप्त किया गया था। यद्यपि इसमें सीखने वाला महत्वपूर्ण है तथापि सिखाने वाले के द्वारा भी किसी भी समय किसी भी स्तर पर कुछ भी सिखाया जा सकता है।

अनुकूली शिक्षा तकनीकें विभिन्न एल्गोरिदम और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग करती हैं ताकि छात्रों के सीखने के तरीके और उनकी कमजोरियों का विश्लेषण किया जा सके। इसके माध्यम से शिक्षण सामग्री को छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अनुकूलित किया जाता है। यह तकनीकें शिक्षकों को भी महत्वपूर्ण सूचनाएँ प्रदान करती हैंए जिससे वे छात्रों को बेहतर तरीके से मार्गदर्शन कर सकते हैं। व्यक्तिगत निर्देश का महत्व इस बात में है कि यह प्रत्येक छात्र के लिए एक अनुकूलित शिक्षा अनुभव प्रदान करता है। यह छात्रों को उनकी क्षमता के अनुसार सीखने का अवसर देता है और उनकी शैक्षणिक प्रगति को बढ़ावा देता है। इसके माध्यम से छात्र अपने सीखने की प्रक्रिया में अधिक संलग्न होते हैं और उनके शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है। हालांकिए इन तकनीकों और व्यक्तिगत निर्देश के समक्ष कई चुनौतियाँ भी हैंए जैसे कि तकनीकी संसाधनों की कमीए शिक्षकों का प्रशिक्षण और डेटा गोपनीयता की समस्याएँ। इसके अतिरिक्तए सभी छात्रों के लिए इन तकनीकों की पहुंच सुनिश्चित करना भी एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अनुकूली शिक्षा तकनीक और व्यक्तिगत निर्देश शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन ला सकते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि इन तकनीकों का सही उपयोग हो और शिक्षा प्रणाली में इनका समावेश हो।

कुंजी शब्दः अनुकूली शिक्षाए व्यक्तिगत निर्देशए शिक्षा तकनीकए एल्गोरिदमए डेटा एनालिटिक्सए शैक्षणिक प्रगति ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शिक्षा का सिद्धात – जी.एस. राय
- शोध-प्रबध शिक्षाशास्त्र विभाग-सीएस० "विद्यार्थियों की सामाजिक परिपक्वता समायोजन और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का तुलामालक अध्ययन"
- भारतीय शिक्षा प्रणाली का विकास- मेरठ आर. लाल बुक डियोए
- □स्टडी ऑफ एकेडमिक□ सेकेण्डरी स्कूल स्टुडेंड शिक्षा विभाग
- शिक्षा- शिक्षा शास्त्र विभागः शोध प्रवन्ध सी०सी०एस जे एम०यू० कानपुर